CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्री ॥

शांडिल्योक्त

शनिदेव व्रत कथा

(विशिष्ट सामग्रियों सहित)

-लेखक-
बेनीप्रकाश गौड़ 'प्रकाश'

-सम्पादक-
अशोक कुमार मिश्र 'सामयिक'

प्रथम संस्करण—१९७३

मूल्य-६० पैसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

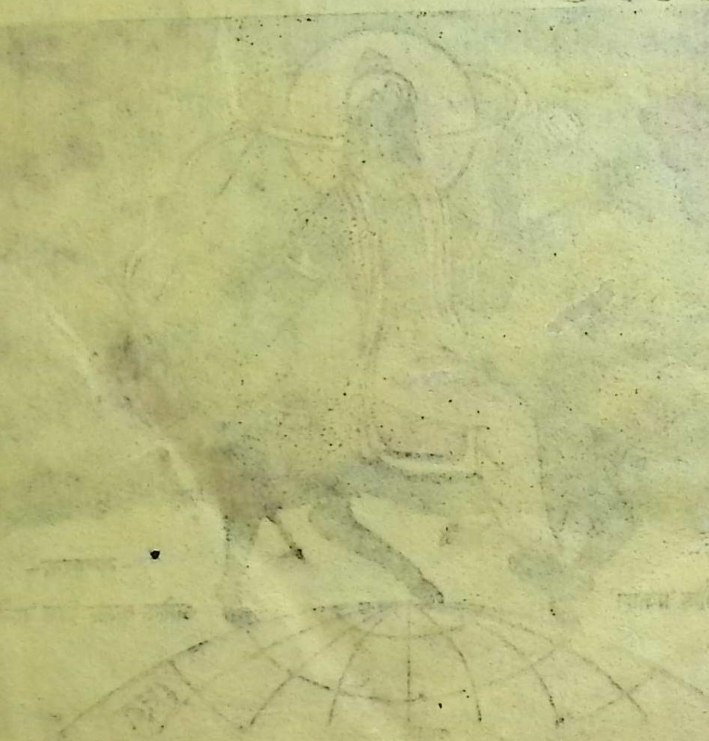

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

❀ श्रीशनैश्चराय नमः ❀

❀ श्री शनिदेव व्रत कथा ❀

(शांडिल्योक्त)

[पूजन-विधि यन्त्र एवं स्तोत्रादि सहित]

लेखक

महामहोपाध्याय पं० विद्याधर जी गौड़ के पौत्र

एवं

उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा सम्मानित

पं० दौलतराम गौड़ वेदाचार्य के पुत्र

'ज्योतिषरत्न-वेदभूषण-पौराणिक'

पं० वेदप्रकाश गौड़ 'प्रकाश'

सम्पादक

अशोककुमार मिश्र 'सामयिक'

डी० १०/१४, विश्वनाथ गली, वाराणसी

प्रकाशक

गुल्लूप्रसाद कालीदास बुकसेलर

कचौड़ीगली, वाराणसी

थम संस्करण १९७३]

[मूल्य ६० पैसा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दो शब्द

मानव के अन्तरंग का मालिक यदि कोई ग्रह हैं तो वह है केवल शनि और इसी ग्रहदेव से समस्त प्राणी डरते हैं और उसकी कृपा पाने के लिये और उसकी अकृपा दृष्टि से बचने के लिये नाना प्रकार के पूजनार्चन प्रायः किया करते हैं। परन्तु फिर भी जैसा वास्तविक फल शनिदेव के पूजनार्चन से प्राप्त होना चाहिये वैसा प्राणियों को प्रायः नहीं मिल पाता हैं। जब इस विषय का वास्तविक अध्ययन किया और शनिदेव से सम्बन्धित पुस्तकों को देखा तो यही निष्कर्ष निकला कि वास्तविक दोष उन लोगों का है जो केवल खानापूर्ति के उद्देश्य से और अपना नाम कमाने की नीयत से पुस्तकें लिखते हैं। जब कि ऐसी पुस्तकों का कोई अस्तित्व नहीं है। इसी कारण से यह छोटी-सी पुस्तक 'शनैश्चर व्रत कथा' 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' बहुत ही तन्मयता से लिखी गई है और उन विशेष आवश्यक सामग्रियों का समावेश भी बहुत ही सोच-विचार कर किया गया है जिससे शनिग्रस्त लोगों का उद्धार हो सके बस यही एक मात्र अभिलाषा है। हमें पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि पुस्तक अपने सद्उद्देश्य में सफल होगी।

भवदीय

पं० वेदप्रकाश गौड़

अशोककुमार मिश्र 'सामयिक'

विजयादशमी
वि० सं० २०३०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पिताश्री

स्व० पं० दौलतरामजी गौड़ वेदाचार्य

❀ समर्पणम् ❀

वन्दे पितृपदं पुण्यं दौलतराम संज्ञकम् ।
तदनु मम सर्वस्वं देवकीनन्दनं गुरुम् ॥
यत्कृपातो निरातङ्कः सातङ्क इव सर्वदा ।
चरामि भूतले नित्यं प्रतिवादिभयङ्कर ॥
अर्पयामि कृतिमेतां शनिदेव कथाभिधाम् ।
तुष्यतामुभावेतौ मत्वेदं बालभाषितम् ॥

'प्रकाश'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गुरुवर

आचार्य पं० देवकीनन्दन शास्त्री

आशीर्वचनम्

यः स्मृत्वा निजपूर्वजान् तद्गुणैः संभूषयन् सर्वदा
चारित्र्येण चिकित्सतुं निजवपुः संचेष्टते श्रद्धया।
सोऽ! श्री शनिदेव पूजनकथां नीत्वा सतां सम्मुखे
नम्रीभूय निवेदनं प्रकुरुते वेदप्रकाशो वटुः॥

अयि! सुधाकर सन्निभभासुराः!! निखिलशास्त्रसुधीगुणचल्लजाः।
अभिनवं लिखकं चिरमायुषं ददत स्नेहधिया शुभमाशिषः॥
वर्धस्व नित्यं मृदुबालचन्द्रवत् कीर्तिं तनोतु शिवशङ्करः सदा।
अन्वर्थतां नाम व्रजन्तु ते सखे! सङ्कल्पसिद्धिश्च भृशं प्रजायताम्॥

—श्री देवकीनन्दन शास्त्री ज्योतिषाचार्य
(स्वर्णपदक प्राप्त)
अध्यक्ष
श्री भृगुज्योतिष कार्यालय
सीके ३५।६, सरस्वती फाटक, वाराणसी—१
फोन नं० ६५५१३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

❋ श्री शनिदेव व्रत कथा ❋

समस्त प्राणियों के हितचिन्तक अठ्ठासी हजार मुनियों ने एक समय नैमिषारण्य में एक सभा की। उस समय व्यास जी के परम प्रिय शिष्य श्री सूत जो भी अपने शिष्यों के साथ श्रीहरि का स्मरण करते हुए वहां पर पधारे। सर्वशास्त्र मर्मज्ञ सूतजी को आया हुआ देखकर शौनकादि मुनि उनके स्वागतार्थ उठकर खड़े हो गये और उनका सादर अभिवादन (नमस्कार) किया।

मुनियों द्वारा प्रदान किये गये आसन पर सूतजी विराजमान हुए। श्रीसूतजी से शौनकादि मुनियों ने विनय पूर्वक पूछा कि हे मुने! इस कलिकाल में श्रीहरि की भक्ति किस प्रकार से होगी? क्योंकि सभी प्राणी पापकृत्य में तत्पर होंगे, मनुष्यों की वास्तविक आयु कम होगी, ग्रह कष्ट होंगे और मनुष्य धन रहित तथा नाना प्रकार की पीड़ाओं से युक्त होंगे। हे सर्वशास्त्रमर्मज्ञ! पुण्य बहुत ही परिश्रम से प्राप्त होता है। इस कारण कलिकाल में कोई भी प्राणी विशेष पुण्य नहीं करना चाहेगा और पुण्य के नष्ट होने से ही प्राणियों की प्रकृति पापयुक्त होगी। घृणित एवं तुच्छ विचार करने वाले प्राणी अपना भी विनाश करेंगे और अपने वंश का भी सर्वनाश करेंगे।

अतः हे सर्वशास्त्र बिशारद! मानव कल्याण के लिये कोई ऐसा सरल उपाय आप बतलाइये जिसमें थोड़ा सा परिश्रम लगे थोड़ा ही धन खर्च हो और थोड़े ही समय में प्राणी को उसका शुभ फल प्राप्त हो जाय।

हे महामुने! जो प्राणी रत्नरूपी ज्ञान द्वारा अन्य प्राणियों को सन्तुष्ट करते हैं उन्हें मनुष्य रूप धारण किये हुए श्रीहरि ही समझना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हे मुने ! कोई ऐसा सरल व्रतोपाय बताइये जिसके करने से शनिदेव द्वारा प्रदत्त कष्ट प्राणियों को न भोगना पड़े और शनिदेव व्रत द्वारा यथाशीघ्र प्रसन्न हो जायें क्योंकि, शनि की ग्रह दशा में प्राणियों को बहुत ही घोर कष्ट सहन करने पड़ते हैं।

शौनकादि मुनियों की वार्ता सुनने के पश्चात् श्रीसूतजी ने कहा—मुनिश्रेष्ठ, तुम धन्य हो और तुम्हीं वैष्णवों में अग्रगण्य हो; क्योंकि तुम प्राणियों के शुभचिन्तक हो। अतः मैं उस उत्तम व्रत को कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो, जिसके करने से भगवान् शंकर प्रसन्न होते हैं और शनिदेव ग्रह से विशेष कष्ट प्राप्त नहीं होते।

सूतजी ने कहा—जिस समय युधिष्ठिर अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ वनवास में अनेकानेक कष्ट भोग रहे थे उस समय उनके प्रिय सखा भगवान् श्रीकृष्णजी उनके पास पहुँचे। धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण जी को आया हुआ देखकर उनका बहुत ही आदर सत्कार किया। प्रेम पूर्वक सुन्दर आसन पर विराजमान होने के पश्चात् श्री कृष्ण जी ने धर्मराज युधिष्ठिर से पूछा कि हे युधिष्ठिर ! सकुशल से तो हो ?

युधिष्ठिर ने कहा—भगवन् ! आपकी कृपा है। कृपा करके कोई ऐसा व्रत बतलाइये, जिसके करने से प्रभो ! यह ग्रह कष्ट न व्यापे, विशेष कर शनिदेव ग्रह प्रभु ! जो बहुत कष्ट देता है।

अतः कोई ऐसा व्रत बताइये जिससे इस कष्ट से छुटकारा मिले।

श्रीकृष्ण बोले—राजन्। आपने बहुत ही सुन्दर बात पूछी है अतः मैं आपसे एक उत्तम व्रत कहता हूँ।

भक्ति और श्रद्धायुक्त होकर शनिवार के दिन व्यक्ति यदि भगवान् शंकर का व्रत करे तो उन्हें शनि की ग्रह दशा में कोई कष्ट नहीं होता है। उन्हें निर्धनता नहीं सताती है तथा इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक में वे अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर अन्त में शिव लोक की प्राप्ति करते हैं।

युधिष्ठिर जी ने भगवान् श्रीकृष्ण जी से पूछा कि सर्वप्रथम इस व्रत को किसने किया था ? इस तथ्य को कृपा कर विस्तार पूर्वक बताइये तथा संपूर्ण विधि भी सविस्तार बताइये।

भगवान् श्री कृष्ण ने कहा—विशेषकर श्रावण मास में शनिवार के दिन ही लौह निर्मित प्रतिमा को पञ्चामृत से स्नान कराकर नानाप्रकार के गन्ध पुष्प, दशांग धूप, फल और उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन कर शनिदेव के दस नामो का उच्चारण कर तिल, जौ, उड़द (काली), गुड़, लौह, नीलवस्त्र और सरसों के तेल का दान कर भगवान् शंकर का विधिपूर्वक पूजन करे आरती और प्रार्थना करे—हे भोलेनाथ। मैं आपकी शरण में हूँ। मुझ दीन पर कृपा करें। मेरी रक्षा कीजिये। ऐसा करने से सभी प्रकार के अनिष्ट, कष्ट आदि संपूर्ण व्याधियों का सर्वथा नाश होता है।

इससे राहु, केतु और शनि जन्य दोष दूर होते हैं और नाना प्रकार के सुख साधन एवं पुत्र पौत्रादि का सुख प्राप्त होता है।

सर्वप्रथम पूर्वकाल में इस धरती पर एक राजा राज्य करता था। उसने अपने शत्रुओं को अपने वश में कर लिया था। दैवगति से राजा और राजा के पुत्र पर शनिग्रह की दशा आ गयी और राजा को उसके शत्रुओं ने समाप्त कर दिया तथा धर्मगुप्त राजकुमार के लिये कोई सहारा नहीं रहा। राजगुरु की बेचारी विधवा ब्राह्मणी अपने पुत्र शुचिव्रत के साथ राजकुमार को लेकर नगरी को छोड़कर चली गयी।

बेचारी निर्धना ब्राह्मणी दोनों कुमारों का बहुत ही कठिनाई से निर्वाह कर पाती थी। कभी किसी नगर तो कभी किसी नगर में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उन दोनों सुकुमारों को अपने संग लिये घूमती रहती थी। एक दिन वह ब्राह्मणी दोनों कुमारों को लिये एक नगर से दूसरे नगर में जा रही थी तो मार्ग में महर्षि शाण्डिल्य जी के दर्शन हुए। ब्राह्मणी ने दोनों बालकों के साथ मुनि के चरणों में प्रणाम किया और बोली कि मैं आज आपके दर्शन से कृतार्थ हो गयी हूँ और यह मेरे दोनों कुमार आपकी शरण में हैं। आप इनकी रक्षा कीजिये।

मुनिवर! यह शुचिव्रत मेरा लड़का है और यह धर्मगुप्त राजपुत्र है तथा मेरा धर्मपुत्र है। हमलोग इस समय घोर दरिद्रता में पड़े हुए नाना प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं। हमारा आप किसी प्रकार उद्धार कीजिये।

शाण्डिल्य मुनि ने ब्राह्मणी की संपूर्ण बातें बड़े ध्यान से सुनी और बोले—देवि, तुम्हारे ऊपर इस समय शनिदेव का पूर्ण प्रकोप है, अतः तुम शनिवार के दिन शनिव्रत करके भगवान् शिवजी की आराधना श्रद्धापूर्वक किया करो। इससे तुम्हारा अवश्य ही कल्याण होगा।

ब्राह्मणी और दोनों कुमार शाण्डिल्य मुनि को प्रणाम कर चले गये। शनिवार के दिन दोनों कुमारों और ब्राह्मणी ने मुनि के उपदेशानुसार शनिदेव का व्रत किया तथा शिवजी का पूजन किया। इस प्रकार व्रत कर्म करते-करते दोनों कुमारों को चार मास व्यतीत हो गये। एक दिन शुचिव्रत स्नानार्थ गया। उसके साथ उस समय धर्मगुप्त नहीं था। स्नान करते समय शुचिव्रत को कीचड़ में एक बहुत ही बड़ा कलश मिला। कलश को उठाकर देखा तो उसको उसमें काफी धन मिला। शुचिव्रत उस कलश को लेकर अपनी माँ के पास चला आया और बोला कि माँ भगवान् शंकर जी के इस प्रसाद को देखो। बाबा भोलेनाथ ने इस कलश के रूप में धन प्रदान किया है।

शुचिव्रत की माँ ने शुचिव्रत को आदेश दिया कि तुम दोनों इस धन को आपस में बाँट लो। माँ के वचन सुनकर शुचिव्रत बहुत ही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रसन्न हुआ और राजकुमार धर्मगुप्त से बोला। किन्तु, पूजा में अटल विश्वास रखने के कारण धर्मगुप्त ने कलश के धन को लेने से इन्कार कर दिया साथ ही अपनी धर्ममाता से कहा कि—मैं हिस्सा नहीं लेना चाहता हूँ क्योंकि जो कोई अपने सुकृत् से जो कुछ भी पाता है वह उसी का भाग (हिस्सा) होता है और उसका उपयोग उसे स्वयं ही करना चाहिये। भगवान् शंकर मुझ पर भी कभी कृपा करेंगे। धर्मगुप्त प्रेम और भक्ति के साथ शनि का व्रत और भगवान् शंकर की पूजा निरन्तर करता रहा और इस प्रकार उसे एक वर्ष व्यतीत हो गया।

चैत्र मास में बसन्त का शुभागमन हुआ और धर्मगुप्त तथा शुचिव्रत दोनों एक साथ वन में भ्रमण करने के लिये बन में घूमते घूमते काफ़ी दूर निकल गये। मार्ग में उन दोनों को सैकड़ों गन्धर्व कन्याएँ नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करती हुई मिलीं जिन्हें देखकर राजकुमार धर्मगुप्त कुछ विचलित सा हुआ और गन्धर्व कन्याओं के द्वारा की जाने वाली क्रीड़ाओं को सन्निकट से देखने की इच्छा करने लगा। शुचिव्रत के समझाने पर भी वह नहीं माना और अकेला ही चला गया। ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत नहीं गया।

क्रीड़ा करती हुई उन गंधर्व कन्याओं के बीच एक अत्यन्त सुन्दरी कुमारी बाला ने जब राजकुमार को देखा तो वह उस पर मोहित हो गई और अपनी सखियों को फूल लाने के बहाने वहाँ से हटा दिया और राजकुमार को बैठने के लिये पल्लवों का आसन दिया। राजकुमार भी मन्त्रमुग्ध सा आसन पर बैठ गया। गन्धर्व कन्या को राजकुमार ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं विदर्भ देश के राजा का पुत्र धर्मगुप्त हूँ। मेरे माता पिता इस संसार में नहीं हैं शत्रुओं ने मेरा राज्य ले लिया और मैं वर्तमान में अपने राजगुरु की विधवा पत्नी और उनके पुत्र शुचिव्रत के साथ रहता हूँ। अपना परिचय देने के पश्चात् राजकुमार ने गन्धर्व कन्या का परिचय पूछा तो गन्धर्व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या ने अपना पूर्ण परिचय देते हुए राजकुमार को बताया कि मैं गन्धर्वराज विद्रविक की कन्या हूँ और मेरा नाम अंशुमती है। आपको देखकर आपसे बात करने की इच्छा हुई, इसी कारण से अपनी सखियों को यहाँ से पुष्प तोड़ने के लिये भेज दिया ताकि आपसे वार्तालाप कर सकूँ। गंधर्व कन्याओं में मेरे समान संगीत कला में निपुण कोई नहीं है। भगवान् शंकर की कृपा से आप मुझे मिले हैं और मेरी यही अभिलाषा है कि आपका और मेरा प्रेम कभी भी न टूटे। अपना इतना परिचय देने के बाद गंधर्व कन्या अंशुमती ने अपने गले का मोतियों का अमूल्य हार राजकुमार धर्मगुप्त के गले में पहिना दिया। गंधर्वराज की कन्या से राजकुमार ने कहा कि मेरे पास न राज्य है और न धन है। ऐसी अवस्था में मेरी भार्या बनना उचित नहीं है। तुम्हारे माता पिता हैं उनसे बिना आज्ञा लिये तुम्हारा यह किया गया निर्णय उचित नहीं है। राजकुमार की बातें सुनने के बाद गन्धर्व कन्या ने कहा कि अब आप अपने घर को जाइये, और परसों प्रातःकाल यहाँ पधारें। इतना कह कर गंधर्व कन्या चली गई और राजकुमार अपने धर्म भाई शुचिव्रत के पास चला आया और उसे सभी समाचार से अवगत कराया।

तीसरे दिन धर्मगुप्त शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में आया। उसने देखा कि स्वयं गंधवराज विद्रविक अपनी कन्या को साथ लेकर उपस्थित हैं। गन्धर्वराज ने दोनों कुमारों का अभिवादन किया और दोनों को सुन्दर आसन पर बैठा कर राजकुमार से कहा कि मैं परसों कैलाश पर्वत पर पार्वती-शंकर के दर्शनार्थ वहाँ गया और भगवान शंकर ने अपने पास बुलाकर कहा कि पृथ्वी पर धर्मगुप्त नामक राजभ्रष्ट राजकुमार है। उसके परिवार के लोगों को शत्रुओं ने समाप्त कर दिया है। वह बालक महर्षि शाण्डिल्य के कहने से शनिवार का व्रत करता है और सर्वदा मेरी भक्ति में तल्लीन रहता है। गंधर्वराज, तुम उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को अपने वश में कर सके। भगवान् भोलेनाथ की आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपने घर चला आया। मेरी कन्या अंशुमती ने भी बहुतेरी प्रार्थना की। भगवान् शंकर की आज्ञा तथा अंशुमती के मन की बात जान कर अंशुमति को लेकर आया हूँ। इसे मैं आपकी पत्नी के रूप में देता हूँ और आपके शत्रुओं को आपके वश में करके आपको आपका खोया हुआ राज वापिस दिलवा दूँगा।

गंधर्वराज ने अपनी कन्या अंशुमती का शुभ विवाह राजकुमार धर्मगुप्त के साथ कर दिया तथा अंशुमती की सहेली का विवाह ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत के साथ कर दिया और धर्मगुप्त की सहायतार्थ गंधर्वराज ने गंधर्वों की चतुरंगिणी सेना दे दी।

धर्मगुप्त के शत्रुओं ने जब यह समाचार सुना तो उन्होंने बिना किसी युद्ध प्रपंच के धर्मगुप्त को अधीनता स्वीकार करके उसके पिता का राज्य सादर लौटा दिया। धर्मगुप्त सिंहासन पर बैठा और राजगुरु के पुत्र शुचिव्रत को अपना मन्त्री नियुक्त किया तथा अपनी धर्ममाता को राज्यमाता बनाया।

शनिवार के व्रत के प्रभाव से और भगवान् शंकर की असीम कृपा से धर्मगुप्त इस प्रकार विदर्भ का राजा बना।

भगवान् श्रीकृष्ण जी ने पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर जी से कहा कि आप भी इस शुभ व्रत को करने लगें तो कुछ समय पश्चात् आपको भी आपका खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त होगा और सभी प्रकार के सुख वैभव की प्राप्ति होगी तथा दुर्दिनों की यथाशीघ्र समाप्ति भी होगी।

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्णजी के आदेशानुसार नियमित रूप से शनिदेव का व्रत आरम्भ किया और शनिव्रत के प्रभाव से सभी विपत्तियों पर विजय प्राप्त की और महाभारत के युद्ध में पूर्ण विजय प्राप्त कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त किया।

समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गोचरगत शनि का शुभाशुभ फल विचार

शुभ—आपकी जन्मराशि से शनि ३, ६ और ११ स्थानों में हो तब उसे शुभ समझना चाहिए। उसका फलः—नवीन उद्योग, मनोरथ सिद्धि, सम्मान देता हैं।

अशुभ—आपकी राशि से जब गोचर का शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० और १२ इन स्थानों में होगा तब वह अशुभ फल देगा। उसका फलः—वह लोगों से विरोध, द्रव्य और जीविका के साधन की हानि, इष्ट, बन्धु विद्रोह, कार्यनाश आदि अशुभ फल प्रद होता है।

श्री शनिजप मंत्र

पुराणोक्त शनिमंत्र

ह्रीं नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

वैदिक शनिमंत्र

ॐ शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः गायत्री छन्दः शनैश्चरोदेवता शनि प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये। शँय्योरभिस्रवन्तु नः॥

तंत्रोक्त शनिमंत्र

प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः

नोट—इन तीनों मन्त्रों में से यज्ञोपवीत धारी हो वैदिक मन्त्र के जप का अधिकारी है, स्त्रियां एवं यज्ञोपवीत से रहित (जनेऊ न धारण करनेवाले) व्यक्ति केवल पौराणिक और तान्त्रिक मन्त्र गुरु-मुख से सुनकर (२३०००) तेइस हजार अथवा इसके चौगुने (कलौ चतुर्गुणं जपेम्) जप करे तथा शनिवार को होम भी करे तो अवश्य लाभ होगा। जो जप स्वयं न कर सकें तो ब्राह्मण के द्वारा करावें अगर स्वयं व्यवस्था न कर सकें तो हमें लिखें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्रीशनिस्तवराजः

अस्य श्रीशनैश्चरस्तवराजस्य सिन्धुद्वीपऋषिः। गायत्रीछन्दः। आपो देवता। शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे पाठे च विनियोगः॥

* नारद उवाच *

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम्॥ १॥

शिरो मे भास्करः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती॥ २॥

घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्त्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु॥ ३॥

सौरि मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥ ४॥

पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम्॥ ५॥

सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः।
सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः॥ ६॥

शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शिखिकण्ठनिभो नीलच्छायाहृदयनन्दनः॥ ७॥

कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावलीमुखः।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः॥ ८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रूर्जटाधरः ।
मन्दो मन्दगतिः खंजो तृप्तः संवर्त्तको यमः ॥ ९ ॥

ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी ।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥ १० ॥

केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः ॥ ११ ॥

विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायकः ॥ १२ ॥

छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्त्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ॥ १३ ॥

तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥ १४ ॥

स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥ १५ ॥

आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिरुक्षदयितो त्रयोदशीतिथिप्रियः ॥ १६ ॥

तिथ्यात्मकस्तिथिगणो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥ १७ ॥

शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्याभयदायकः ।
नीलवासः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः ॥ १८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥

पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान् यः स्तवं सदा ॥२०॥

विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥

दशासु च गते सौरौ तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षतांबरैः ॥२२॥

विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
बाधा याऽन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥२३॥

भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते नात्र संशयः ॥२४॥

श्रीनारद उवाच

स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूत् शनैश्चरः ।
दत्वा राज्ञे वरः कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा ॥२५॥

॥ इति श्रीभविष्यपुराणे शनैश्चरस्तवराजः समाप्तः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्रीशनि स्तोत्रम्

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे पाठे च विनियोगः।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥

सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै० ॥ २ ॥

नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै० ॥ ३ ॥

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै० ॥ ४ ॥

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै० ॥५॥

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै० ॥६॥

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै० ॥७॥

स्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाको।
एकस्त्रिधा ऋग्यजु साममूर्तिस्तस्मै० ॥८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते ॥९॥

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥१०॥
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥११॥

श्रीशनिकवचम्

अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । शनैश्चरो देवता । शीं शक्तिः शूं कीलकं । शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे पाठे च विनियोगः ॥

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः ॥१॥

ब्रह्मा उवाच

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥ २ ॥
कवचं देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ ३ ॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥ ४ ॥
नासां विवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा ।
स्निग्धकण्ठश्च मे कंठं भुजौ पातु महाभुजः ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥ ६ ॥

नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा ।
ऊरू ममांतकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥ ७ ॥

पादौ मन्दगतिः पातु सर्वाङ्गं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः ॥ ८ ॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥ ९ ॥

व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा ।
कलत्रस्थो गतो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥१०॥

अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित् ॥११॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
द्वादशाष्टमजन्मस्थदोषान्नाशयते सदा ।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥ १२ ॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनैश्चरकवचं सम्पूर्णम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्रम्

ग्रहाणामादिरादित्यः खे च रक्षणकारकः ।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे रविः ॥ १ ॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥ २ ॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा ।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥ ३ ॥

उत्पत्तिरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान्पीडां हरतु मे बुधः ॥ ४ ॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः ॥ ५ ॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः ॥ ६ ॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
दीर्घचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः ॥ ७ ॥

महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ॥ ८ ॥

अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ पूजन एवं दानविधि ❋

शनिवार के दिन विशेषकर श्रावण मास में शनिवार को पूर्ण पवित्रता से स्नानादि कार्यों से निवृत्त होकर शनिदेव की लौह निर्मित प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर फिर शुद्ध जल से स्नान करवाकर नाना प्रकार के गन्ध, पुष्प, दशांग धूप, फल और सर्वोत्तम प्रकार के नैवेद्यादि से पूजन कर शनिदेव के दस नामों का प्रेम पूर्वक उच्चारण करे। तत्पश्चात् शनि स्तोत्र का पाठ कर भगवान् शंकर का पूजन करना चाहिये। शनिदेव के दान में काला तिल, काली उड़द, लोहा, नीले और श्याम वर्ण का वस्त्र और नीलम आदि तथा सरसों के तेल का दान करना चाहिये।

नोटः—शनि का दान सर्वदा मध्यान्ह काल में ही करना चाहिये। क्योंकि, शनि के दान का समय मध्यान्ह काल ही ज्ञानियों ने निश्चित किया है। शनि का दान शनि ब्राह्मण (शनि का दान ग्रहण करनेवाला) को ही देना चाहिए।

●

श्रीशनि गायत्री मन्त्र—

ॐ भग भवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शौरिः प्रचोदयात्॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

❋ श्री शनिदेव की आरती ❋

जय शनिदेव हरे स्वामी जय शनिदेव हरे।
जो कोई मन से ध्यावे उनके विघ्न हरे॥
जय शनिदेव हरे०।

सतयुग सूरज स्वामी के घर छाया में जन्मे।
पति को तेज निरख कर थी बडवा बन में॥
जय शनिदेव हरे०।

त्रेतायुग में दशरथ राजा भक्ति करी।
भाव भक्ति के कारण अमृत वृष्टि करी॥
जय शनिदेव हरे०।

रामचन्द्र पर कोपे तब सब राज हरे।
खुशी भये जब उनपर तब सब भाँति भरे॥
जय शनिदेव हरे०।

अवतार लिए जब गणपति गिरिजा याद किये।
दृष्टि तुम्हारी पड़ते ही शिशु मुख रहित किये।
जय शनिदेव हरे०।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

द्वापर युग में पाण्डवगण जब बनवास गये।
भक्ति तुम्हारी करके तब वे सुखी भये॥
जय शनिदेव हरे०।

कलियुग में एक राजा विक्रम भये भारी।
दशा तुम्हारी लगते ही दुर्गति भयी भारी॥
जय शनिदेव हरे०।

देख दुःखी अति भारी सपने दरस दियो।
पूजा मनसे कीनी तिनको सुखी कियो॥
जय शनिदेव हरे०।

दशा और अन्तर या हो साढ़ेसाती।
जिनकी दुर्गति भारी उनके तुम साथी॥
जय शनिदेव हरे०

शाण्डिल्य मुनि हैं कहते वे शनिकथा सुनें।
शनिदिन व्रत और पूजा कर लें दुःख हरें॥
जय शनिदेव हरे०।

[आचार्य श्रीदेवकीनंदन शास्त्री विरचित श्रीशनिदेव आरती संपूर्ण]

अमर मुद्रणालय, (काशी गोशाला), टाउनहाल, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—लेखक—

—सम्पादक—

निम्नलिखित पद्धतियाँ प्रेस में हैं—

१—व्यतीपात व्रत कथा (विधान एवं उद्यापन सहित)

२ मंगलवार व्रत कथा (विशिष्ट सामग्रियों सहित)

३—सत्यनारायण व्रत कथा (भाषा-टीका)

३—बृहद् पार्वण श्राद्ध पद्धति (भाषा-टीका)

५ - गया श्राद्ध-पद्धति

६—तुलसी विवाह पद्धति (माहात्म्य-पूजन सहित)

७—कार्तिकेय व्रत-कथा

८—नृसिंह सहस्रनाम

९—नृसिंह स्तोत्र

१०—भुवनेश्वरी पूजार्चन (तांत्रिकी)

प्रकाशक—

गुल्लूप्रसाद कालीदास बुक्सेलर

कचौड़ी गली, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh